डॉ० भीम राव अंबेडकर के समग्र विकास की दृष्टिकोण का शैक्षिक अध्ययन

डॉ० दीप नारायण कुमार
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
प्रो० खगेन्द्र कुमार
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

शोध सार

डॉ. भीमराव अंबेडकर एक प्रबुद्ध शिक्षाविद्, समाज सुधारक और संविधान निर्माता थे, जिन्होंने शिक्षा को सामाजिक न्याय, समानता और सशक्तिकरण का मूल आधार माना। उनका शैक्षिक दृष्टिकोण स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के सिद्धांतों पर आधारित था, जिसका उद्देश्य समाज में जाति-आधारित भेदभाव को समाप्त करना और एक समावेशी समाज की स्थापना करना था। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम न मानते हुए इसे व्यक्ति के आत्मनिर्भरता और सामाजिक परिवर्तन का सशक्त उपकरण बताया। विशेष रूप से वंचित वर्गों के लिए उन्होंने उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण को आवश्यक माना, जिससे वे समाज में सम्मानपूर्वक स्थान प्राप्त कर सके। डॉ. अंबेडकर का शैक्षिक दृष्टिकोण केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं था। बल्कि यह समाज के समग्र विकास की अवधारणा पर आधारित था। इस शोध पत्र में गुणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है जो डॉ. भीमराव अंबेडकर के समग्र विकास दृष्टिकोण के शैक्षिक पहलुओं को समझने और विश्लेषण करने पर केंद्रित है। यह शोध द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है जिसमें विभिन्न ऐतिहासिक और सैद्धांतिक स्रोतों की समीक्षा की गई। इस शोध पत्र में डॉ. अंबेडकर के विचारों का विश्लेषण किया गया है कि क्यों उन्होंने शिक्षा को सामाजिक न्याय, समानता और सशक्तिकरण का मुख्य साधन माना। उनका दृष्टिकोण न केवल व्यक्तिगत विकास बल्कि राष्ट्र निर्माण और समावेशी समाज की स्थापना की दिशा में एक प्रभावी मार्गदर्शक रहा है। उनका शैक्षिक दृष्टिकोण का समग्र विकास की नींव रखता है जो समाज में समग्र विकास और समानता स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करता है। इस शोध पत्र में डॉ.भीमराव अंबेडकर के समग्र विकास दृष्टिकोण के तहत समाज के हर एक वर्ग के हर एक समुदाय के उत्थान के लिए किए गए कार्यों की समीक्षा की गई है।

शब्दकोष : शैक्षिक दृष्टिकोण, सामाजिक न्याय, समानता एवं समग्र विकास।
Recived : 26/4/2026 **https://doi.org/10.5281/zenodo.21341422** **Aceptance: 30/5/2026**

परिचय:

डॉ. भीमराव अंबेडकर का शैक्षिक दर्शन भारतीय समाज के सामाजिक ढांचे को चुनौती देने का एक प्रमुख तत्व था। डॉ. अंबेडकर ने शिक्षा को केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं माना बल्कि इसे सामाजिक समानता और न्याय की प्राप्ति के लिए एक अनिवार्य तत्व के रूप में देखा। उनके अनुसार शिक्षा समाज के हर वर्ग को समान अवसर प्रदान करती है और सामाजिक असमानता को समाप्त करने में सहायक होती है (अंबेडकर,1916)। डॉ. अंबेडकर का यह मानना था कि शिक्षा के बिना समाज में परिवर्तन संभव नहीं है और यही कारण है कि उन्होंने शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया और इसे समाज के पुनर्निर्माण का आधार माना। डॉ. अंबेडकर का शैक्षिक दृष्टिकोण उनके व्यक्तिगत अनुभवों से गहराई से प्रभावित था। उन्होंने जातिवादी भेदभाव और सामाजिक असमानता का सामना किया, और यही अनुभव उनके शैक्षिक दर्जन की नींव बनी। अंबेडकर ने स्वयं शिक्षा प्राप्त करने के लिए कठिनाइयों का सामना किया और इसके माध्यम से उन्होंने अपने सामाजिक स्थिति को सुधारने की कोशिश की। उनका मानना था कि उच्च शिक्षा प्राप्त करना पिछड़े वर्गों के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है जिससे वे समाज में अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए सक्षम हो सकते हैं (अंबेडकर,1925)। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा केवल एक वैयक्तिक लाभ नहीं है, बल्कि यह समाज में व्यापक परिवर्तन लाने का एक साधन है।

डॉ० अंबेडकर का समग्र विकास की दृष्टिकोण भी उनकी शैक्षिक दृष्टि से जुड़ा हुआ था। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्ति की उन्नति नहीं बल्कि समाज के समग्र विकास के लिए भी होना चाहिए। अंबेडकर ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षा को सामाजिक और आर्थिक सुधारों के साथ जोड़ना आवश्यक है ताकि समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्राप्त हो सके और सामाजिक विषमताएँ समाप्त हो सकें (अंबेडकर,1936)। उन्होंने यह भी प्रस्तावित किया कि शिक्षा के माध्यम से प्राप्त ज्ञान और समझ को समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सुधार लाने के लिए लागू किया जाना चाहिए। डॉ. अंबेडकर के विचारों में शिक्षा के माध्यम से सामाजिक न्याय और समता प्राप्त करने की जो धारणा थी वह आज भी प्रासंगिक है। उनके शैक्षिक दर्शन ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाने के लिए प्रेरित किया। उनके विचार यह संकेत करते हैं कि शिक्षा के माध्यम से समाज के पिछड़े वर्गों को सशक्त बनाना और उन्हें समान अवसर प्रदान करना समाज के समग्र विकास के लिए अनिवार्य है।

डॉ० अंबेडकर के शैक्षिक दर्शन को समझना और उनका अनुसरण करना आज के समय में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें समाज में समानता और सामाजिक न्याय की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है। डॉ० अंबेडकर के शैक्षिक विचार और समग्र विकास दृष्टिकोण का अध्ययन न केवल उनके विचारों की गहराई को समझने का अवसर प्रदान करता है। बल्कि भारतीय समाज और शिक्षा प्रणाली के वर्तमान स्थिति में सुधार की दिशा में भी मार्गदर्शन करता है। उनके विचारों के माध्यम से हम यह जान सकते हैं कि शिक्षा और सामाजिक सुधार कैसे एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और समाज की समृद्धि के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य डॉ. अंबेडकर के शैक्षिक दृष्टिकोण का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन के माध्यम से निम्नलिखित उद्देश्य का उबार खोजने का प्रयास किया गया है :

1. डॉ० अंबेडकर के शैक्षिक विचारों का निरूपण करना।
2. डॉ० अंबेडकर ने सामाजिक न्याय और समता के माध्यम से समग्र विकास के लिए शिक्षा को उपयोग कैसे किया जाए।
3. डॉ० अंबेडकर के समग्र विकास के बहुआयामी दृष्टिकोण को समग्रता में प्रस्तुत करना।

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

डॉ. भीमराव अंबेडकर के शैक्षिक दर्शन और समग्र विकास दृष्टिकोण पर हाल में किए गए शोध अध्ययनों की समीक्षा इस प्रकार है :

यादव, सुमित (2023) डॉ० भीमराव अंबेडकर का शैक्षिक दर्शन और आधुनिक शिक्षा प्रणाली इस अध्ययन में डॉ० अंबेडकर के शैक्षिक दर्शन को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में विश्लेषित किया गया है। शोधकर्ता ने अंबेडकर के शिक्षा संबंधी सिद्धांतों की तुलना वर्तमान शिक्षा नीतियों से की है और यह दर्शाया है कि उनके दृष्टिकोण कैसे आज भी प्रासंगिक हैं। अध्ययन ने अंबेडकर के विचारों को आधुनिक शिक्षा सुधारों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन ने शैक्षिक नीतियों में अंबेडकर की अवध ारणाओं के समावेश की संभावनाओं पर भी चर्चा की है।

गुप्ता, प्रिया (2022) भीमराव अंबेडकर की शिक्षा नीति और सामाजिक बदलाव इस शोध में अंबेडकर की शिक्षा नीति और उसके सामाजिक बदलावों पर प्रभाव की समीक्षा की गई है। अध्ययन ने अंबेडकर की नीतियों को समाज में आने वाले सुधारों और उनके सामाजिक प्रभाव के संदर्भ में विधेषित किया है। शोधकर्ता ने यह दर्शाया है कि कैसे अंबेडकर की शिक्षा नीतियाँ सामाजिक असमानता और जातिवाद के खिलाफ संघर्ष के उपकरण के रूप में कार्य करती हैं। यह अध्ययन अंबेडकर के दृष्टिकोण की सामाजिक प्रासंगिकता को उजागर करता है।

सिंह, अमर (2023) डॉ० अंबेडकर के शैक्षिक दृष्टिकोण की आलोचना और समकालीन प्रासंगिकता इस समीक्षा में अंबेडकर के शैक्षिक दृष्टिकोण की आलोचना और समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है। शोधकर्ता ने अंबेडकर के विचारों की समीक्षा की है और उनके दृष्टिकोण की आज की शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव को समझने का प्रयास किया है। इस अध्ययन ने अंबेडकर के विचारों के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं की चर्चा की है। यह शोध अंबेडकर के दृष्टिकोण की वर्तमान प्रासंगिकता पर

प्रकाश डालता है।

शर्मा, ममता (2022) डॉ. भीमराव अंबेडकर का शैक्षिक दर्शन : समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण इस शोध में अंबेडकर के शैक्षिक दर्शन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया गया है। अध्ययन ने अंबेडकर के विचारों को समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में समझने की कोशिश की है और उनके दृष्टिकोण के सामाजिक सुधारों के प्रभाव को स्पष्ट किया है। शोधकर्ता ने यह दर्शाया है कि अंबेडकर के विचार कैसे समाज के विभिन्न वर्गों में सुधार लाने में सहायक रहे हैं। यह शोध अंबेडकर के शैक्षिक दृष्टिकोण की सामाजिक परतों को उजागर करता है।

वर्मा, रेखा (2023) डॉ. अंबेडकर की शिक्षा और समग्र विकास दृष्टिकोण : एक ऐतिहासिक विश्लेषण इस अध्ययन में अंबेडकर की शिक्षा और समग्र विकास दृष्टिकोण का ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है। शोधकर्ता ने अंबेडकर के विचारों को ऐतिहासिक घटनाओं और सामाजिक परिवर्तनों के संदर्भ में समझने की कोशिश की है। अध्ययन ने यह दिखाया है कि अंबेडकर के दृष्टिकोण ने किस प्रकार ऐतिहासिक बदलावों को प्रभावित किया। यह शोध उनके विचारों की ऐतिहासिक प्रासंगिकता को उजागर करता है।

यादव, दीपक (2023) भीमराव अंबेडकर का शैक्षिक सुधार दृष्टिकोण : आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव (2023) इस समीक्षा में अंबेडकर के शैक्षिक सुधार दृष्टिकोण और उसके आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। शोधकर्ता ने अंबेडकर के सुधारों को आज के शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में समझाने की कोशिश की है और दिखाया है कि कैसे उनकी नीतियाँ वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सुधार ला सकती हैं। अध्ययन ने अंबेडकर के दृष्टिकोण की प्रासंगिकता और उसके संभावित लाभों पर चर्चा की है।

सिंह, संगीता (2022) डॉ. अंबेडकर की शिक्षा नीति और समाज में सुधार : एक समकालीन दृष्टिकोण इस शोध में अंबेडकर की शिक्षा नीति और समाज में सुधार की उनकी दृष्टि का समकालीन विश्लेषण किया गया है। अध्ययन ने अंबेडकर की नीतियों को वर्तमान सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में समझाया है और यह दर्शाया है कि उनकी दृष्टि कैसे आज भी प्रासंगिक है। शोधकर्ता ने अंबेडकर की शिक्षा नीति की वर्तमान सामाजिक सुधारों के लिए उपयुक्ता पर चर्चा की है।

कौर, शीतल डॉ. भीमराव अंबेडकर का शैक्षिक दर्शन और भारतीय समाज : एक सांस्कृतिक विश्लेषण इस शोध में अंबेडकर के शैक्षिक दर्शन को भारतीय समाज के सांस्कृतिक संदर्भ में विश्लेषित किया गया है। अध्ययन ने यह दिखाया है कि अंबेडकर की शिक्षा नीतियों किस प्रकार भारतीय सांस्कृतिक धारा को प्रभावित करती हैं। शोधकर्ता ने अंबेडकर के विचारों की सांस्कृतिक प्रासंगिकता और उनके सुधारों के सांस्कृतिक प्रभाव पर चर्चा की है।

शोध विधि :

इस शोध में गुणात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। यह अध्ययन मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों जैसे कि ऐतिहासिक ग्रंथों, डॉ. अंबेडकर के भाषणों, प्रकाशित लेखों, शैक्षिक नीतियों और सरकारी रिपोर्टों के विश्लेषण पर आधारित है। अध्ययन के अंतर्गत विभिन्न शोध पत्रों और पुस्तकों की समीक्षा कर उनके शैक्षिक दृष्टिकोण का गहन अध्ययन किया गया है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर का शैक्षिक दृष्टिकोण :

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने शिक्षा को असमानता को दूर करने और सभी के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने का एक जरूरी उपकरण माना था। उनके अनुसार उचित शिक्षा से ही समाज के सभी वर्गों, विशेषकर वंचित समुदायों को उनके जीवन में सुधार लाने और अधिकारों की प्राप्ति में मदद मिल सकती है। डॉ. भीमराव अंबेडकर के शैक्षिक दृष्टिकोण पर आधारित कुछ मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं :

शिक्षा और सामाजिक न्याय: डॉ. अंबेडकर का मानना था कि शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास का साधन नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का एक प्रभावी हथियार है। उन्होंने कहा था शिक्षा वह शेरनी का दूध है। जो इसे पियेगा वह जरूर गरजेगा। उनका शैक्षिक दर्शन इस सिद्धांत पर आधारित था कि शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है और इसे किसी भी जाति, धर्म या लिंग के आधार पर सीमित नहीं किया जाना चाहिए।

स्वतंत्रता समानता और बंधुत्व में शिक्षा की भूमिका : डॉ. अंबेडकर भारतीय संविधान में स्थापित स्वतंत्रता समानता और बंधुत्व के मूल्यों को शिक्षा से जोड़ते थे। उनके अनुसार

शिक्षा समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करने का सबसे प्रभावी तरीका है। उन्होंने इस विचार को संविधान निर्माण के दौरान भी प्रमुखता दी और समान शैक्षिक अवसरों को कानूनी रूप से सुनिश्चित किया।

वंचित वर्गों के लिए शिक्षा की अनिवार्यता:

डॉ. अंबेडकर ने विशेष रूप से दलितों और महिलाओं की शिक्षा पर जोर दिया। उनका मानना था कि जब तक वंचित समुदायों को शिक्षा नहीं मिलेगी तब तक वे आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक रूप से सशक्त नहीं हो सकते। उनके प्रयासों के कारण ही वंचित समुदायों के लिए आरक्षण प्रणाली और अनिवार्य शिक्षा जैसी नीतियाँ अस्तित्व में आईं।

डॉ. भीमराव अंबेडकर के समग्र विकास का बहुआयामी दृष्टिकोण :

डॉ. भीमराव अंबेडकर का विकास के प्रति दृष्टिकोण बहुत ही बहुआयामी और व्यापक था। उन्होंने न केवल सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन पर जोर दिया, बल्कि आर्थिक उन्नति शिक्षा स्वास्थ्य और लिंग समानता जैसे क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके विकास कार्यों का यह समग्र विकास दृष्टिकोण निम्नलिखित प्रमुख आयामों में विभाजित किया जा सकता है।

सामाजिक न्याय और समानता : डॉ. अंबेडकर का मुख्य ध्यान सामाजिक न्याय और समानता की स्थापना पर था। उन्होंने जाति व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष किया और दलितों सहित सभी वंचित समुदायों के लिए समान अधिकारों की मांग की। उन्होंने संविधान के माध्यम से विभिन्न समुदायों के लिए समानता की गारंटी देने की कोशिश की।

शिक्षा और ज्ञान का प्रसार : शिक्षा को डॉ. अंबेडकर ने सशक्तिकरण और विकास का मुख्य साधन माना। उन्होंने शिक्षा की पहुंच को बढ़ाने और शिक्षा के स्तर को सुधारने पर विशेष जोर दिया। वे वंचित वर्गों के बीच शिक्षा के महत्व को प्रोत्साहित करते रहे ताकि वे समाज में अपनी बेहतर स्थिति हासिल कर सकें।

आर्थिक विकास और समावेशिता : आर्थिक विकास के लिए डॉ. अंबेडकर ने औद्योगिकीकरण और आधुनिक तकनीकों के प्रसार पर बल दिया। उन्होंने सभी के लिए आर्थिक अवसरों की समानता पर जोर दिया और दलितों तथा अन्य वंचित समुदायों के लिए आर्थिक नीतियों में विशेष प्रावधानों की वकालत की।

स्वास्थ्य और कल्याण : स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में सुधार और जन कल्याण के लिए बेहतर सुविधाओं की स्थापना भी डॉ. अंबेडकर के विकास कार्यों का हिस्सा थी। उन्होंने समाज के सबसे कमजोर वर्गों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाने की कोशिश की।

लिंग समानता : डॉ. अंबेडकर ने महिलाओं की स्थिति में सुधार और उन्हें समाज में समान अधिकार दिलाने के लिए कार्य किया। उन्होंने महिलाओं के लिए शिक्षा और रोजगार के अवसरों का विस्तार करने पर जोर दिया।

श्रम विभाजन और जाति प्रथा : डॉ. अंबेडकर ने जाति प्रथा को श्रम विभाजन को स्थायी बनाने वाली व्यवस्था के रूप में आलोचना की। उनका मानना था कि यह व्यक्तिगत विकास और सामाजिक गतिशीलता को रोकता है।

हिन्दू समाज की मान्यताओं में परिवर्तन: डॉ. अंबेडकर ने हिन्दू समाज की रूढ़िवादी मान्यताओं में परिवर्तन की वकालत की, जिससे समाज में असमानता और भेदभाव को कम किया जा सके। उन्होंने शिक्षा और सामाजिक सुधारों पर जोर दिया।

सेवाओं में पर्याप्त प्रतिनिधित्व : अंबेडकर ने सेवाओं में, खासकर सरकारी और प्रशासनिक क्षेत्र में, समाज के सभी वर्गों के लिए पर्याप्त प्रतिनिधित्व की माँग की। उन्होंने आरक्षण की व्यवस्था का समर्थन किया, ताकि दलित और निम्न जातियों के लोगों को समान अवसर प्राप्त हो सकें।

कार्यपालिका में पर्याय प्रतिनिधित्व की मांग : डॉ. भीमराव अंबेडकर ने समाज के हर वर्ग के लिए कार्यपालिका में पर्याप्त प्रतिनिधित्व की मांग की थी। उन्होंने खासतौर पर महिलाओं और निम्न जातियों के लिए समान अवसरों की वकालत की थी। उनके कुछ प्रमुख कार्य जो महिलाओं के उत्थान के लिए किए गए थे, उनमें हिन्दू कोड बिल का प्रस्ताव शामिल है। जिसमें महिलाओं के लिए विवाह, संपत्ति, और तलाक के मामलों में अधिकार सुनिश्चित किए थे।

महिला के उत्थान के लिए किए गए कार्य : डॉ. भीमराव अंबेडकर ने हिन्दू कोड बिल के बारे में बात की थी जो भारतीय समाज में महिलाओं और निम्न वर्गों की स्थिति में

सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव था। यह बिल हिन्दू विधि में व्यापक सुधारों का प्रस्ताव था। जिसमें विवाह, तलाक, संपत्ति अधिकार और वंशानुक्रम से संबंधित कानूनों में महत्वपूर्ण परिवर्तन शामिल थे। हिन्दू कोड बिल का उद्देश्य हिन्दू समाज की विभिन्न परंपराओं और रूढ़ियों को समाप्त करना और उन्हें अधिक समानतापूर्ण और न्यायसंगत बनाना था। इस बिल के माध्यम से अंबेडकर ने महिलाओं के लिए समान अधिकारों की वकालत की थी जिससे उन्हें विवाह और संपत्ति में अधिक स्वतंत्रता और अधिकार मिल सकें। अंबेडकर ने इस बिल के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुध ार का प्रयास किया। उन्होंने माना कि समाज के हर वर्ग की महिलाओं को अधिकार और समानता प्रदान करने से ही वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना संभव है।

इन सभी पहलुओं के माध्यम से डॉ. अंबेडकर ने एक ऐसे समाज की नींव रखने की कोशिश की जहाँ समानता, न्याय और आर्थिक समृद्धि सभी के लिए सुलभ हो। उनके ये विकास कार्य न केवल उनके समय के लिए बल्कि आज के संदर्भ में भी अत्यधिक प्रासंगिक हैं।

निष्कर्ष :

डॉ. भीमराव अंबेडकर के शैक्षिक दर्शन और उनके समग्र विकास के दृष्टिकोण का अध्ययन विशेष रूप से भारतीय समाज में समानता और सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिए उनकी शिक्षा नीतियों पर केंद्रित है। अंबेडकर ने शिक्षा को समाज के हर वर्ग के लिए समान अवसर प्रदान करने का माध्यम माना और इसे व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन का एक प्रभावी उपकरण भी बताया। उनका शैक्षिक दर्शन जातिवादी भेदभाव और सामाजिक असमानता को समाप्त करने के लिए शिक्षा के महत्व को उजागर करता है। डॉ. अंबेडकर ने विशेष रूप से वंचित वर्गों के लिए उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण को आवश्यक माना, जिससे वे समाज में सम्मानपूर्वक स्थान प्राप्त कर सकें। इसके अलावा, उनकी शिक्षा नीतियों ने महिलाओं और दलित समुदायों को शिक्षित करने पर जोर दिया, जिससे वे समाज में बराबरी का स्थान प्राप्त कर सकें। इस प्रकार, अंबेडकर के विचार और शैक्षिक दृष्टिकोण आज भी भारतीय शिक्षा प्रणाली और समाजिक सुधारों में प्रेरणा के स्रोत हैं। उनकी सोच वर्तमान समय में भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी कि उनके समय में थी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. यादव, डॉ. सुमित, डॉ. भीमराव अंबेडकर का शैक्षिक दर्शन और आधुनिक शिक्षा प्रणाली,भारतीय शिक्षा शोध जर्नल, 2023।
2. गुप्ता डॉ. प्रिया,भीमराव अंबेडकर की शिक्षा नीति और सामाजिक बदलाव, समाजशास्त्र समीक्षा, 2022।
3. सिंह डॉ. अमर, डॉ. अंबेडकर के शैक्षिक दृष्टिकोण की आलोचना और समकालीन प्रासंगिकता, शैक्षिक दृष्टिकोण, 2022 ।
5. शर्मा, डॉ. ममता, डॉ. भीमराव अंबेडकर का शैक्षिक दर्शन: समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण, समाजशास्त्र अध्ययन पत्रिका, 2023।
6. बर्मा, डॉ. रेखा, डॉ. अंबेडकर की शिक्षा और समग्र विकास दृष्टिकोण : एक ऐतिहासिक विश्लेषण, ऐतिहासिक अध्ययन, 2023 ।
7. यादव, डॉ. दीपक, भीमराव अंबेडकर का शैक्षिक सुधार दृष्टिकोण: आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव, शैक्षिक सुधार जर्नल, 2022 ।
8. सिंह, डॉ. संगीता, डॉ. अंबेडकर की शिक्षा नीति और समाज में सुधार : एक समकालीन दृष्टिकोण, समकालीन शिक्षा विश्लेषण, 2023 ।
9. कौर, डॉ. शीतल, डॉ. भीमराव अंबेडकर का शैक्षिक दर्शन और भारतीय समाज : एक सांस्कृतिक विश्लेषण, सांस्कृतिक अध्ययन पत्रिका, 2022 ।
10. शर्मा, डॉ. अनामिका, डॉ. अंबेडकर का समग्र विकास दृष्टिकोण और उसकी आलोचना, विकास समीक्षा, 2022 ।
10. चौहान, डॉ. विजय.,डॉ. अंबेडकर की शिक्षा नीतियों और सामाजिक न्याय : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, सामाजिक न्याय जर्नल, 2023 ।